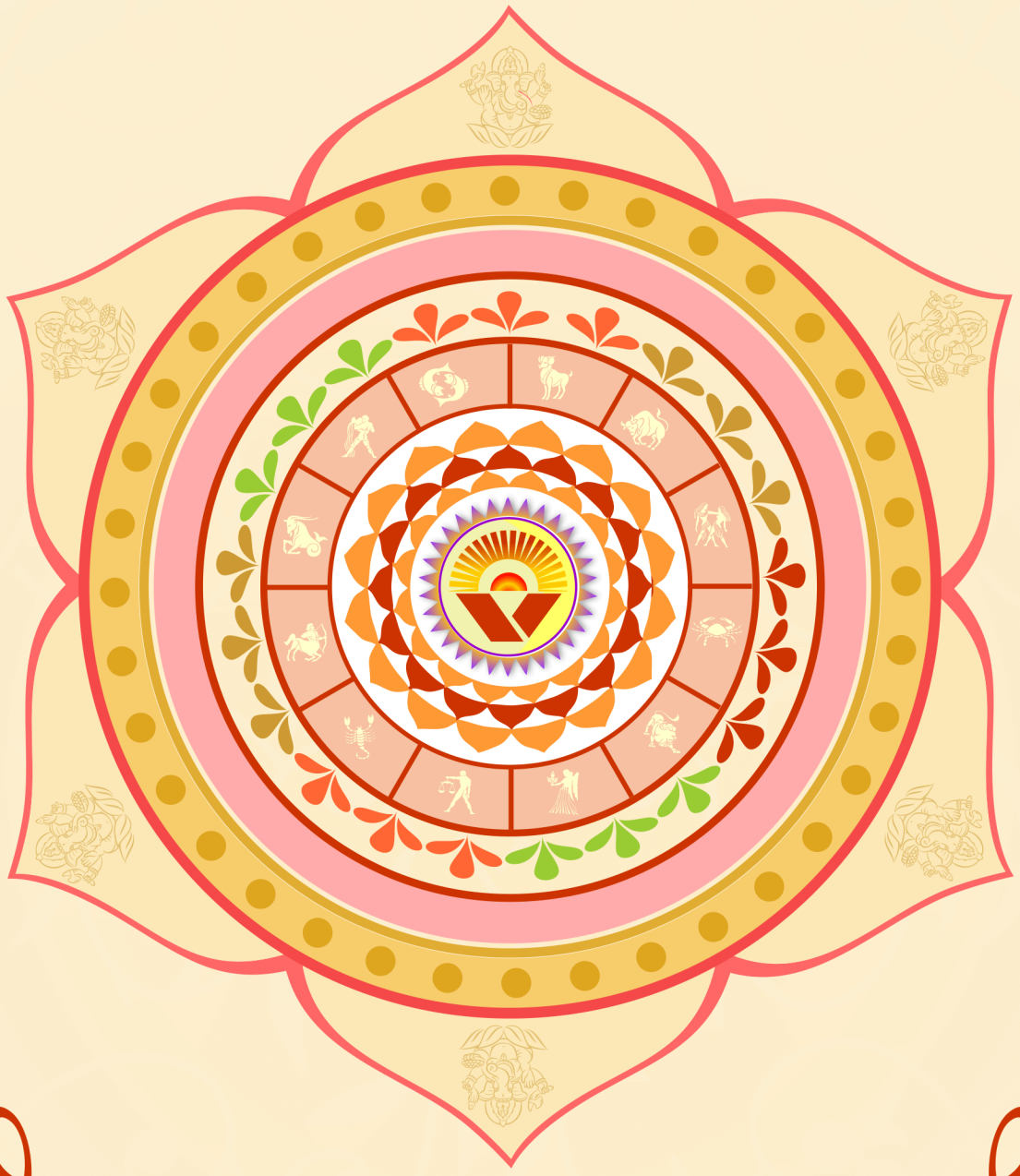

Name: Sample, DOB: 18:12:1973

TOB: 01:45:00, PLACE: New Delhi, india ()

Mindsutra Software Technologies
www.mindsutra.com
Ph: 9818193410

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

जन्म दिनाकं	18:12:1973(मंगलवार)
जन्म समय	01:45:00
जन्म स्थान	New Delhi, india
अक्षांश	028:39:00N
रेखांश	077:13:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00
जी. एम. टी. समय	020:15:00
स्थानीय समय	001:23:52 hrs
सांपातिक काल	007:09:06 hrs
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:07
अयनांश	N.C.Lahiri(023:29:36)
सूर्योदय	07:11:22AM
सूर्यास्त	05:24:25PM
विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
संवत्सर अधिपति	इन्द्राग्नि

घात चक्र

राशि (सूर्य)	कुम्भ
मास	फाल्गुन
तिथि	5,10,15
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	अश्लेषा
प्रहर	4
लग्न	सिहं
सूर्य सिद्धान्त योग	वज्र
करण	चतुश्पद

अवकहड़ा चक्र

लग्न	कन्या
लग्नाधिपति	बुध
राशि (चन्द्रमा)	कन्या
राशिपति	बुध
नक्षत्र	हस्ता
नक्षत्रपति	चन्द्रमा
नक्षत्र चरण	2
ऋतु	बसन्त
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	नवमी
तिथि श्रेणी	रिक्ता
तिथि पति	सूर्य
करण	गरिज
करण श्रेणी	चर
करणपति	वासुदेव
गण	देव
योनि	हस्त (स्त्री)
वर्ण	वैश्य
सूर्य सिद्धान्त योग	सौभाग्य
रज्जु	कंठ
वश्य	द्विपद
तत्व	अग्नि
विहग	वायस
तत्वाधिपति	मंगल
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	Shaa
पाया	स्वर्ण

ग्रह स्थिती

लग्न कुण्डली

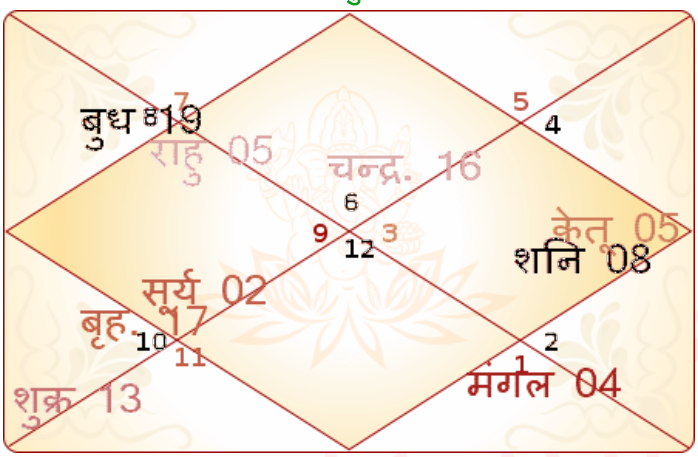

नवांमश कुण्डली

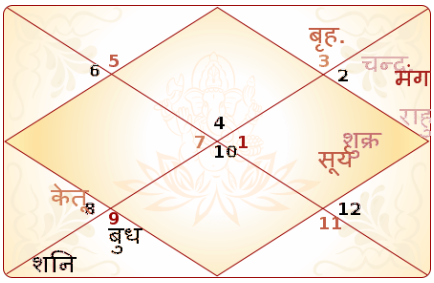

चन्द्र कुण्डली

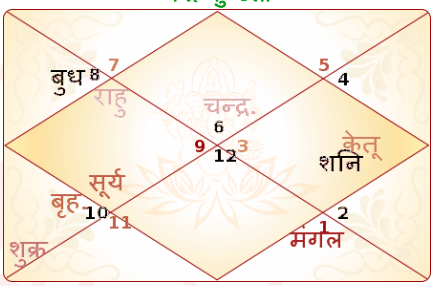

ग्रह स्थिती

ग्रह	राशि	अंश	गति	रा. पति	नक्षत्र	च.	न	न. पति	नवांश	नव. पति	विशेष
लग्न	कन्या	21:42:13	...	बुध	हस्ता	4	13	चन्द्रमा	कक्र	चन्द्रमा	
सूर्य	धनु	02:15:49	01:01:04	बृहस्पति	मूला	1	19	केतु	मेष	मंगल	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	13:01:33	बुध	हस्ता	2	13	चन्द्रमा	वृष	शुक्र	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:42:17	00:14:54	मंगल	अश्विनी	2	1	केतु	वृष	शुक्र	स्व राशि
बुध (ग्र.)	वृश्चिक	19:51:24	01:31:14	मंगल	ज्येष्ठा	1	18	बुध	धनु	बृहस्पति	स्व नक्षत्र
बृहस्पति	मकर	17:56:39	00:12:02	शनि	श्रवण	3	22	चन्द्रमा	मिथुन	बुध	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	00:32:45	शनि	श्रवण	1	22	चन्द्रमा	मेष	मंगल	मित्र राशि
शनि (व.)	मिथुन	08:12:33	00:04:55	बुध	अरिद्रा	1	6	राहु	धनु	बृहस्पति	मित्र राशि
राहु (व.)	धनु	05:10:35	00:03:10	बृहस्पति	मूला	2	19	केतु	वृष	शुक्र	सम राशि
केतु (व.)	मिथुन	05:10:35	00:03:10	बुध	मृगशिर	4	5	मंगल	वृश्चिक	मंगल	सम राशि
हर्षल	तुला	03:20:59	00:02:22	शुक्र	चित्रा	4	14	मंगल	वृश्चिक	मंगल	...
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:40	00:02:10	मंगल	अनुराधा	4	17	शनि	वृश्चिक	मंगल	...
प्लूटो	कन्या	13:11:14	00:00:46	बुध	हस्ता	1	13	चन्द्रमा	मेष	मंगल	...

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	..	71	354	193	58	116	111	257	73	253	12	53	351
सूर्य	289	..	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चन्द्रमा	6	76	..	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	167	238	161	..	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	302	12	296	135	..	58	53	198	15	195	313	354	293
बृहस्पति	244	314	238	77	302	..	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	249	319	243	82	307	5	..	145	322	142	260	301	240
शनि	103	174	98	296	162	220	215	..	177	357	115	156	95
राहु	287	357	281	120	345	43	38	183	..	180	298	339	278
केतु	107	177	101	300	165	223	218	3	180	..	118	159	98
हर्षल	348	59	343	181	47	105	100	245	62	242	..	41	340
नेपच्यून	307	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	..	299
प्लूटो	9	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	..

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (अयनाश : 023:29:36) चन्द्रमा 5.0 व.5.0 म.26 द.

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	चन्द्रमा	5.0 y.5.0 m.26 d.	18:12:1973
2	मंगल	7.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1979
3	राहु	18.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1986
4	बृहस्पति	16.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2004
5	शनि	19.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2020
6	बुध	17.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2039
7	केतु	7.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2056
8	शुक्र	20.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2063
9	सूर्य	6.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2083

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
बृहस्पति	
शनि	18:12:1973
बुध	14:04:1975
केतु	13:09:1976
शुक्र	14:04:1977
सूर्य	13:12:1978

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	14:06:1979
राहु	10:11:1979
बृहस्पति	28:11:1980
शनि	04:11:1981
बुध	13:12:1982
केतु	10:12:1983
शुक्र	08:05:1984
सूर्य	08:07:1985
चन्द्रमा	13:11:1985

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	14:06:1986
बृहस्पति	24:02:1989
शनि	20:07:1991
बुध	26:05:1994
केतु	13:12:1996
शुक्र	31:12:1997
सूर्य	31:12:2000
चन्द्रमा	25:11:2001
मंगल	26:05:2003

बृहस्पति दशा

अन्तर्दशा	से
बृहस्पति	13:06:2004
शनि	01:08:2006
बुध	12:02:2009
केतु	20:05:2011
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	25:12:2014
चन्द्रमा	13:10:2015
मंगल	12:02:2017
राहु	19:01:2018

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
बृहस्पति	01:12:2036

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	14:06:2039
केतु	10:11:2041
शुक्र	07:11:2042
सूर्य	07:09:2045
चन्द्रमा	14:07:2046
मंगल	13:12:2047
राहु	10:12:2048
बृहस्पति	29:06:2051
शनि	04:10:2053

केतु दशा

अन्तर्दशा	से
केतु	13:06:2056
शुक्र	10:11:2056
सूर्य	10:01:2058
चन्द्रमा	17:05:2058
मंगल	16:12:2058
राहु	14:05:2059
बृहस्पति	01:06:2060
शनि	08:05:2061
बुध	17:06:2062

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	14:06:2063
सूर्य	13:10:2066
चन्द्रमा	13:10:2067
मंगल	14:06:2069
राहु	14:08:2070
बृहस्पति	14:08:2073
शनि	13:04:2076
बुध	14:06:2079
केतु	14:04:2082

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	14:06:2083
चन्द्रमा	01:10:2083
मंगल	01:04:2084
राहु	07:08:2084
बृहस्पति	02:07:2085
शनि	20:04:2086
बुध	02:04:2087
केतु	06:02:2088
शुक्र	13:06:2088

भाव स्फूट और कुण्डली

लग्न कुण्डली

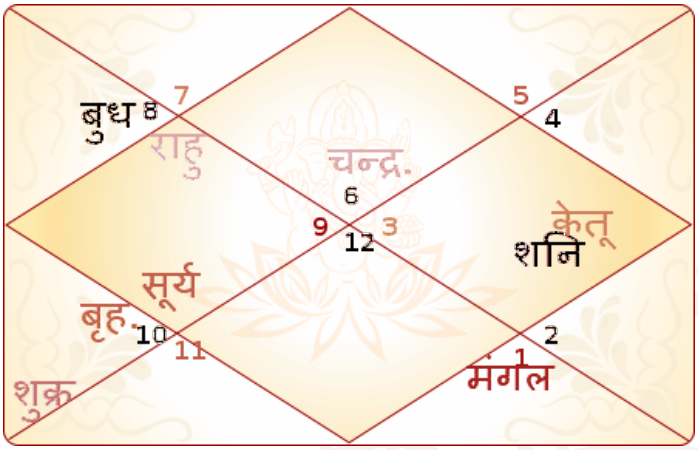

भाव कुण्डली

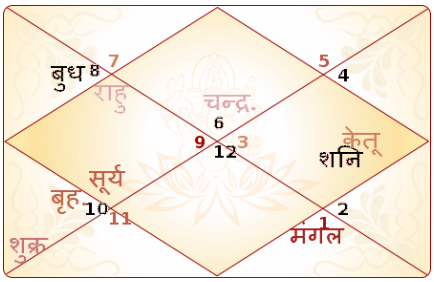

भाव चलित कुण्डली

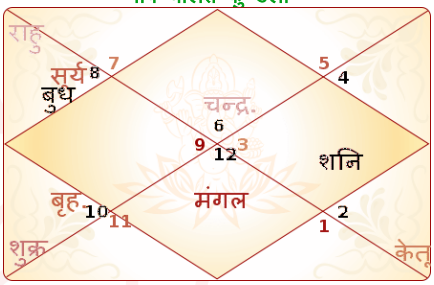

भाव सख्या	भाव मध्य			भाव विस्तार (आरम्भ——अन्त)		
1	कन्या	21:42:13	कन्या	06:49:31	तुला	06:49:31
2	तुला	21:56:50	तुला	06:49:31	वृश्चिक	07:04:08
3	वृश्चिक	22:11:26	वृश्चिक	07:04:08	धनु	07:18:44
4	धनु	22:26:02	धनु	07:18:44	मकर	07:18:44
5	मकर	22:11:26	मकर	07:18:44	कुम्भ	07:04:08
6	कुम्भ	21:56:50	कुम्भ	07:04:08	मीन	06:49:31
7	मीन	21:42:13	मीन	06:49:31	मेष	06:49:31
8	मेष	21:56:50	मेष	06:49:31	वृष	07:04:08
9	वृष	22:11:26	वृष	07:04:08	मिथुन	07:18:44
10	मिथुन	22:26:02	मिथुन	07:18:44	कर्क	07:18:44
11	कर्क	22:11:26	कर्क	07:18:44	सिहं	07:04:08
12	सिहं	21:56:50	सिहं	07:04:08	कन्या	06:49:31

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

भाव	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
I	71	354	193	58	116	111	257	73	253	12	53	351
II	40	324	163	28	86	81	226	43	223	341	22	321
III	10	294	133	358	56	51	196	13	193	311	352	291
IV	340	264	102	327	26	21	166	343	163	281	322	261
V	310	234	73	298	356	351	136	313	133	251	292	231
VI	280	204	43	268	326	321	106	283	103	221	262	201
VII	251	174	13	238	296	291	77	253	73	192	233	171
VIII	220	144	343	208	266	261	46	223	43	161	202	141
IX	190	114	313	178	236	231	16	193	13	131	172	111
X	160	84	282	147	206	201	346	163	343	101	142	81
XI	130	54	253	118	176	171	316	133	313	71	112	51
XII	100	24	223	88	146	141	286	103	283	41	82	21

गोचर शनि

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर। सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	07/09/1977	04/11/1979	2.0 y.1.0 m.28 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	15/03/1980	27/07/1980	0.0 y.4.0 m.12 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	04/11/1979	15/03/1980	0.0 y.4.0 m.10 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	27/07/1980	06/10/1982	2.0 y.2.0 m.10 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	06/10/1982	21/12/1984	2.0 y.2.0 m.15 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	01/06/1985	17/09/1985	0.0 y.3.0 m.17 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	17/12/1987	21/03/1990	2.0 y.3.0 m.3 d.	ताम्र
कंटक शनि	धनु	20/06/1990	15/12/1990	0.0 y.5.0 m.26 d.	लौह
अष्टम शनि	मेष	17/04/1998	07/06/2000	2.0 y.1.0 m.21 d.	रजत

द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	01/11/2006	10/01/2007	0.0 y.2.0 m.10 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	16/07/2007	10/09/2009	2.0 y.1.0 m.26 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	10/09/2009	15/11/2011	2.0 y.2.0 m.6 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	16/05/2012	04/08/2012	0.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	15/11/2011	16/05/2012	0.0 y.6.0 m.1 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	04/08/2012	02/11/2014	2.0 y.2.0 m.29 d.	रजत
कंटक शनि	धनु	26/01/2017	21/06/2017	0.0 y.4.0 m.24 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	26/10/2017	24/01/2020	2.0 y.2.0 m.29 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	मेष	03/06/2027	20/10/2027	0.0 y.4.0 m.18 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	मेष	23/02/2028	08/08/2029	1.0 y.5.0 m.14 d.	लौह
अष्टम शनि	मेष	05/10/2029	17/04/2030	0.0 y.6.0 m.12 d.	रजत

तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	27/08/2036	22/10/2038	2.0 y.1.0 m.25 d.	स्वर्ण
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	05/04/2039	13/07/2039	0.0 y.3.0 m.8 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	22/10/2038	05/04/2039	0.0 y.5.0 m.13 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	13/07/2039	28/01/2041	1.0 y.6.0 m.17 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	06/02/2041	26/09/2041	0.0 y.7.0 m.19 d.	स्वर्ण
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	28/01/2041	06/02/2041	0.0 y.0.0 m.9 d.	लौह
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	26/09/2041	11/12/2043	2.0 y.2.0 m.15 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	23/06/2044	30/08/2044	0.0 y.2.0 m.7 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	08/12/2046	06/03/2049	2.0 y.2.0 m.27 d.	ताम्र
कंटक शनि	धनु	10/07/2049	04/12/2049	0.0 y.4.0 m.25 d.	ताम्र
अष्टम शनि	मेष	07/04/2057	27/05/2059	2.0 y.1.0 m.20 d.	स्वर्ण

उपयुक्त रत्न का सुझाव

लग्नाधिपति के लिए रत्न

लग्नाधिपति (लग्न का स्वामी) – बुध

आपका लग्नेश है। चूंकि यह ना तो नीचस्थ है और ना ही त्रिक भाव या मारक भाव में स्थित है। इसलिए आप के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

बुध के लिए रत्न

पन्ना की भौतिक संरचना

पन्ना एक काफी आकर्षक रत्न है। पन्ना काफी कठोर होता है, लेकिन इसे आसानी से काटा जा सकता है। यह गहरा एवं चमकदार हरा रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, प्रकृति के प्रति प्रेम, खुशहाली एवं आनन्द का सूचक है। हरा जेड, पेरिडोट, हरा तुरमली, सवोराइट, हरा डायोप्साइड इत्यादि पन्ना के ऊपरत्न हैं।

पन्ना धारण करने के फायदे

पन्ना धारण करने से सफलता, सौभाग्य एवं खुशहाली प्राप्त होती है। इससे बुद्धि तीव्र होती है तथा सीखने की योग्यता, दूरदर्शिता, स्मरण शक्ति, विश्वास, अन्तर्दृष्टि एवं सूक्ष्म–दृष्टि का विकास होता है। पन्ना धारण करना स्वास्थ्य– विशेषकर तंत्रिका एवं आंखों के लिए लाभदायक होता है। इससे विषयवस्तु के पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति में मदद मिलती है। यह विषैले जीवों एवं ईर्ष्यालू व्यक्तियों के भय से बचाता है। पन्ना जहर का नाश एवं पाचन में मदद करता है। पन्ना धारक को प्रेत साया से दूर रखता है एवं पापों से मुक्ति दिलाता है। पन्ना धारण करने से अन्न, धन, सम्पत्ति एवं वंश में वृद्धि होती है।

रोगों पर पन्ना का प्रभाव

पन्ना धारण करने या पन्ना की भस्म का सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– पथरी, गुदा की गांठ, बहुमूत्र, खून गिरना, बवासीर, पित्त ज्वर, ज्वर, खांसी, गुर्दे का विकार, रक्त–विकार, आधासीसी इत्यादि।

धारण करने के नियम पन्ना

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित पन्ना ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। पन्ना सोने से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। पन्ना इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। पन्ना का वजन 3–7 कैरेट (3–7 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। यदि बुध मिथुन या कन्या राशि में हो या अश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती नक्षत्र में हो तथा बुध अथवा सूर्य के नवमांश में बुध स्थित हो तो बुधवार के दिन सूर्योदय से लेकर दो घंटे बाद सोने की अंगूठी में पन्ना जड़वाकर धारण करना चाहिए।

बुधवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे के बाद नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले बुध देवता के बीज मंत्र का 9 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त बुध अष्टोत्तर शतनामावली (बुध ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसके उपरांत बुध देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

पन्ना दान की विधि

यंत्र

चांदी के पत्र पर यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में पन्ना जड़वाकर उसकी प्राण–प्रतिष्ठा करें। फिर बुध मंत्र से पन्ने को बुधवार के दिन अभिमंत्रित करें। 64 दिन तक लगातार उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए यंत्र की विधिवत् पूजा

9	4	11
10	8	6
5	12	7

करते रहें। तत्पश्चात्, सोना, मूंगा, कांस्य, घी, शक्कर, कपूर, हरा वस्त्र, हाथी दांत, एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। बुधवार के दिन 10 बजे तक इस दान को करने से श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

पन्ना के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 3 वर्ष तक पन्ना प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद पन्ना का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः उपरोक्त अवधि के बाद पन्ना बदल देना चाहिए।

नवमेश के लिए रत्न

नवमेश–

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

योग–कारक ग्रह –

आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्राकृतिक योग––कारक ग्रह नहीं है।

तात्कालिक योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

तात्कालिक योग–कारक ग्रह –

ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में तात्कालिक योग––कारक ग्रह है।चूंकि तात्कालिक योग–कारक ग्रह ना तो उच्चस्थ है, ना ही नीचस्थ है और ना ही अपने भाव में उपस्थित है। अतः आप ग्रह के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

शनि के लिए रत्न

नीलम की भौतिक संरचना

नीलम एक काफी आकर्षक रत्न है। यह अपने सौन्दर्य, आकर्षक रंग, पारदर्शिता, प्रतिरोधक शक्ति एवं स्थायित्व के लिए जाना जाता है। यह नीले रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, सहानुभूति, मित्रता, भरोसा एवं वफादारी का सूचक है। तंजेनाइट, नीला स्पाइनल, जम्बुमणि इत्यादि नीलम के ऊपरत्न हैं।

नीलम धारण करने के फायदे

नीलम धारण करने से सफलता, सौभाग्य, खुशहाली प्राप्त होती है। यह जीवन में स्थायीत्व प्रदान करता है। नीलम दूसरों की ईर्ष्या एवं कुदृष्टि से बचाता है। यात्रा के दौरान आने वाले खतरों को दूर करता है। स्वास्थ्य लाभ एवं मानसिक अशांति या मानसिक बीमारियों को दूर करने में नीलम काफी सहायक होता है। नीलम रचनात्मक कार्यों, अन्तर्दृष्टि एवं ध्यान को प्रेरित करता है। नीलम जुकाम एवं पित्तदोष में लाभदायक होता है तथा शनि के प्रकोप से बचाता है। नीलम धारण करने से धारक दीर्घायु होता है एवं सम्मान, यश, ज्ञान एवं धन–सम्पत्ति प्राप्त करता है। नीलम सत्तापक्ष से सम्मान दिलवाता है, दुश्मनों से रक्षा करता है एवं मोह–माया को दूर करता है।

रोगों पर नीलम का प्रभाव

नीलम धारण करने या औषधि के रूप में सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– नेत्र रोग, मुंह से खून आना, दिमाग की गर्मी, हिचकी, पागलपन, खांसी, ज्वर, उपदंश, अजीर्ण, विषमज्वर इत्यादि।

धारण करने के नियम नीलम

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित नीलम ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। नीलम सोना, चांदी या लोहे से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। नीलम इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचाा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। नीलम का वजन 3–7 कैरेट (कम से कम 4 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। जब शनि मकर अथवा कुम्भ राशि में हो या तुला राशि में उच्चस्थ हो या शनिवार को उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र हो, उस दिन नीलम सोना, चांदी या लोहे में जड़वाकर धारण करें।

शनिवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे चालीस मिनट पहले नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले शनि देवता के बीज मंत्र का 23 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त शनि अष्टोत्तर शतनामावली (शनि ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसके उपरांत शनि देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को मध्यमा अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

नीलम दान की विधि

यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

रांगा, सीसा या लोहे के पत्र पर शनि यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में नीलम जड़वाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। फिर शनि मंत्र से नीलम को शनिवार के दिन अभिमंत्रित करें। मध्याह्न काल में दीप बलि दें। त्तपश्चात् लोहा, उड़द, सरसों का तेल, भैंस, उपानह, काला वस्त्र एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। इस प्रकार दान करने से शनि से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

नीलम के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 5 वर्ष तक नीलम प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद नीलम का प्रभाव

नष्ट हो जाता है। अतः 5 वर्ष के बाद नीलम बदल देना चाहिए।

जन्म राशि के आधार पर रूद्राक्ष का सुझाव

आपकी जन्म राशि है। आपके लिए चतुर्मखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव ब्रह्मा हैं। यह परिवार उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ाने की क्षमता प्रदान करता है और आयुष्मान होने का वर देता है।

चारमुखी रूद्राक्ष को बृहस्पतिवार के दिन लाल धागे में पिरोकर सूर्योदय के बाद केले के पौधे से छुआकर ऊँ ब्रह्मा देवाय नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

आपकी जन्म राशि है। आपके लिए षट्मुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव कार्तिकेय हैं। यह सामर्थ्य तथा शासन संबंधी कलाएं प्रदान करता है और विज्ञान, तकनीकी शिक्षा एवं शल्य चिकित्सा आदि क्षेत्रों में सफलता निश्चित करता है।

छःमुखी रूद्राक्ष के तीन मनकों को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को शिवलिंग से छुआकर ऊँ नमः शिवाय कार्तिकेय नमः मंत्र का जप करते हुए गले में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय

सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं–

शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह–– उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह–– मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह–– अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)–– अशुभ।

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम––राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कक्र, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि

प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिव्हा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ।।

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण––प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी––देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान करायें, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें–

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें –

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

अब रूद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।
भवेभवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नमः ।।

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रूद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रूद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें –

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो: घोर घोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

फिर रूद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें –

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोद्यात्।

चंदन का लेप करने पश्चात रूद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें –

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।।

चतुर्मखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री ब्रह्म मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, ब्रह्मा देवता, वां बीजं, क्रां शक्तिः, सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, ब्रह्मदेवतायै नमः हृदि, वां बीजाय नमः गुह्ये, क्रां शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल––करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तां अनामिकाभ्यां नमः, ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ईं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ क्रां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम्। ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

प्रणम्य शिरसा शाश्वदष्टनेत्रं चतुर्मुखम्।
गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम्।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ वां क्रां तां हां इं (मूल मंत्र)
२–ॐ ह्रीं हूं नमः
३–ॐ ह्रीं
४–ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
५–ॐ नमः शिवाय
६–ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

षट्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्री षष्ठमुखौ देवता, ऐं बीजं, सौं शक्तिः, क्लीं कीलकं, रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमो मुखे, कार्तिकेय देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, सौं शक्तये नमः पादयो, क्लीं कीलकायै नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल––करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम्। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

क्रौञ्चपर्वतविदारणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः।
चूतपल्लवशिरोमणिचोदी भोष्षडानन जगत्परिपाहि।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं (मूल मंत्र)
२–ॐ ह्रीं नमः
३–ॐ हूम्

४-ॐ हूं नमः

५-ॐ ह्रीं हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रूद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात, रूद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रूद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रूद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ।।

. रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।
. रूद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।
. रात में रूद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया––कर्म से निवृत्त होकर ऊँ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।
. अभिमान ना करें।
. परोपकार करें।
. रूद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग ना करें।
. क्रोध ना करें।
. अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।
. किसी को अपशब्द ना कहें।
. ब्रह्मचर्य का पालन करें।
. रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।
. नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।
. रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।
. रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।
. हमेशा नित्यकर्म से निवृत होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।
. किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना करें।
. गंदगी से दूर रहें।

. रूद्राक्ष के प्रति निष्ठा रखें।

. रूद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर ना लटकायें।

. रूद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

. शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

जांच संख्या 1 –

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है, तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष नकली है।

जांच संख्या 2 –

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटकाकर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल––गोल घूमने लगेगें। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है, तो ये असली हैं।

जांच संख्या 3 –

एक कप दूध के अन्दर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होता है, तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह झूठा है।

कन्या लग्न के लिए रत्नों का चुनाव

अपनी समस्याओं या कष्टों से निजात पाने के लिए या भाग्योदय के लिए या शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आवश्यकतानुसार रत्न धारण करें।

माणिक रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में सूर्य व्यय भाव का स्वामी है। माणिक धारण करना आपके लिए अशुभ हो सकता है।

मोती रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में चंद्रमा ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर मिश्रित फल प्रदान करेगा। आपको मोती धारण करने से बहुत अधिक शुभ फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कारक ग्रह नहीं है। योग्य ज्योतिषी की सलाह से ही मोती धारण करें।

यदि आप मानसिक रूप से अशांत रहते हों या सर्दी–कफ आदि से ग्रसित रहते हों या शरीर में कैल्सियम की कमी हो और आपकी कुण्डली में चंद्रमा पापी ग्रह राहु एवं शनि के साथ स्थित नहीं हो तो मोती धारण करने से लाभ होगा।

मूंगा रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में मंगल तीसरे एवं आठवें भाव का स्वामी है। आपको मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।

यदि आप रक्त, मांस, मज्जा आदि से संबंधित किसी रोग से पीड़ित हैं, तो आपको मूंगा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। मूंगा ना धारण करना ही आपके लिए बेहतर होगा।

पन्ना रत्न धारण करने के लिए सुझाव

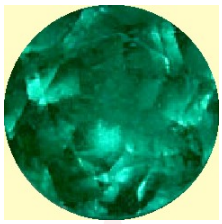

आपकी कुण्डली में बुध पहले भाव एवं दसवें भाव का स्वामी है। पन्ना धारण करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि आप बौद्धिक विकृति, विवेक में कमी, शिक्षा प्राप्ति में बाधा, मानसिक रोग, मिर्गी, पागलपन या वाणी दोष से ग्रसित हैं, तो आपको पन्ना धारण करना चाहिए।

पुखराज रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में गुरु चौथे एवं सातवें भाव का स्वामी है। पुखराज धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

यदि आप कपास, वस्त्र, साहित्य आदि से जुड़ा कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपके लिए पुखराज धारण करना लाभदायक रहेगा।

आपकी कुण्डली में गुरु लग्नेश बुध से शत्रुता रखता है। अतः किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह के बाद ही पुखराज धारण करें।

यदि आपके विवाह में बाधा आ रही है या विवाह में देरी हो रही है या वैवाहिक जीवन में बाधा आ रही है, तो आपको गहरे पीले रंग का पुखराज धारण करना चाहिए।

हीरा रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में शुक्र दूसरे एवं भाग्य भाव का स्वामी है। विपरीत परिस्थितियों में शुभ फल प्राप्त करने के लिए आपको हीरा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र भाग्य भाव का स्वामी है। हीरा धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

यदि आपके विवाह में कोई बाधा आ रही है या विवाह मे देरी हो रही है या विवाह पश्चात वैवाहिक जीवन में तनाव हो रहा है या स्त्री–सुख प्राप्त नहीं हो रहा हो, तो आपको हीरा धारण करना चाहिए।

यदि आप खाद्य पदार्थ, रस, फल, कास्मेटिक्स आदि का व्यवसाय करते हैं, तो आपके लिए हीरा धारण करना लाभदायक होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र, बुध या शनि के साथ स्थित नहीं है। यदि आप यौन रोगों या गुप्त रोगों से पीड़ित हैं तो आपको हीरा धारण करने से लाभ होगा।

नीलम रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में शनि पांचवें एवं छठे भाव का स्वामी है। आपको नीलम धारण करने से लाभ होगा।

शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या के शुरू होने पर नीलम अवश्य धारण करें।

आपकी कुण्डली में नौवें, दसवें या लग्न भाव पर शनि का प्रभाव है। आपको नीलम धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में लग्नेश शनि का मित्र ग्रह है। रोग, शत्रु, शिक्षा, संतान, वाणी आदि से संबंधित शुभ फलों के लिए आप नीलम धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न धारण करने के लिए सुझाव

राहु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः राहु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में राहु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर शनि की स्थिति देखकर किया जाता है।

जन्मकुण्डली में शनि के स्थिति के अनुसार गोमेद धारण करना चाहिए, अन्यथा हानि भी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में राहु केन्द्र भाव (1, 4, 7, 10) या त्रिकोण भाव (5, 9) में स्थित है। यदि आप सार्वजनिक जीवन में पद सम्मान, ख्याति प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपके लिए गोमेद धारण करना लाभदायक रहेगा।

आपकी राशि मेष, वृश्चिक या धनु नहीं है। आपके लिए गोमेद धारण करना लाभदायक होगा।

लहसुनियॉ रत्न धारण करने के लिए सुझाव

केतु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः केतु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में केतु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर किया जाता है।

लहसुनिया बिना किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह के ना पहनें। लहसुनिया अत्यंत कम समय के लिए धारण किया जाता है। लाभदायक परिणाम प्राप्त होने के बाद इसे विसर्जित कर देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु लग्न एवं चंद्रमा दोनों से केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

यदि आप किसी अज्ञात भय, चोट आतंक, दुर्घटना, कलंक आदि की संभावना से परेशान हैं या किसी प्रकार के मानसिक रोग से ग्रस्त हैं, तो आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

आपकी राशि वृष, मिथुन या कर्क है और केतु छठे, आठवें, दसवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया धारण नहीं करना चाहिए।

ज्योतिषीय परामर्श –

यदि आप कालसर्प दोष, ब्रह्म दोष, मातृ, पितृ, भातृ, स्त्री दोष आदि से अशुभ फल प्राप्त कर रहे हैं या दुख, दरिद्रता, कष्ट, अपमान, रोग, शत्रु, कर्ज आदि से लम्बे समय से परेशान है, तो आप तीन रत्नों का लॉकेट या अंगूठी सोने या चांदी में बनवाकर एक साथ धारण कर सकते हैं।

लाकेट –

1– पन्ना, 2– नीलम, 3– हीरा।

अँगूंठी –

1– हीरा (तर्जनी में)

2– नीलम (मध्यमा में)

3– पन्ना (कनिष्ठिका में)

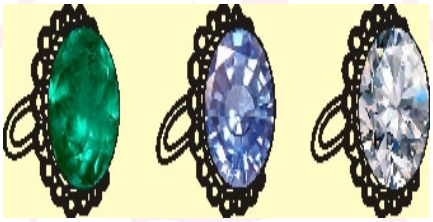

अन्य महत्वपूर्ण सुझाव –

1– भाग्यवर्द्धक रत्न– हीरा।

2– कार्य व्यवसाय, नौकरी, धनदायक रत्न– पन्ना।

3– संतान, शिक्षा, ख्यातिदायक रत्न– नीलम।

4– भीषण कष्ट, रोग, शत्रु या हानिकारक रत्न– मूंगा, माणिक।

सूर्य ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।

भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः
षट्त्रिस्थो दश शोभनो गुरुशशीभौमेषु मित्र सदा।
शुक्रो मंदरिपुकलिङ्गजनितश्चाऽग्नीश्वरो देवता
मध्येवर्तुल पूर्वादिग् दिनकरः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

सूर्य ग्रह के लिए रत्न

भावगत/राशिगत सूर्य का फल

आपकी कुण्डली में सूर्य धनु राशि में स्थित है। जैसाकि सूर्य मित्र राशि में सुव्यवस्थित है, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप चौड़े गठन की भव्य और प्रभावी शारीरिक संरचना से पूर्ण होंगे। आप बहुत उत्साही, उर्जावान और सदा आशावादी होंगे। आप एक विद्वान, बुद्धिमान और विवेकी व्यक्ति होंगे, लोग आपके विचारों और मतों को मान तथा महत्व देंगे और आपको बहुत सम्मान देंगे। आप बड़ों एवं सदाचारी लोगों का आदर करेंगे तथा धर्म व ईश्वर में आस्था रखेंगे। यद्यपि आप अन्दर से शांतिप्रिय होंगे, फिर भी सुरक्षा के उद्देश्य से आपकी मार्शल आर्ट में महारत हासिल करने में बहुत रूचि हो सकती है, आप अपनी विद्वता की कुशलता से उपयोग ईमानदार योग्य लोगों को उचित प्रशिक्षण देने में कर सकते हैं। आपको अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त होगी और आप कई अनुयायियों की प्रेरणा का स्रोत होंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। जैसाकि आपका लग्न कन्या है, द्वादशेश सूर्य की चौथे भाव में

स्थिति कुछ मामलों में एक अनुकूल योग नहीं है। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है और आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण या खुशहाल नहीं हो सकता है। इसके अलावा परिवार के सदस्यों में विशेष मतभेद के कारण सम्पत्ति का बंटवारा या नुकसान हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव नहीं हैं, तो आपका परिवार अपना सम्मान खो सकता है– संभवतः आपके कुछ अविवेकपूर्ण कार्यों के कारण। आपकी शिक्षा बाधित हो सकती है और आपको अपना घर तथा पैतृक स्थान अचानक पारिस्थितिक बाधाओं के कारण छोड़ना पड़ सकता है।

सूर्य ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

अमावस्या तिथि का जन्म

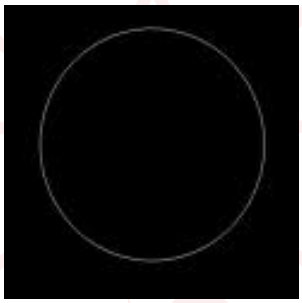

यदि आपका जन्म अमावस्या के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म होने के कारण आपके पारिवारिक और मानसिक सुख में कमी, संतान सुख में बाधा और यथोचित मान–सम्मान में कमी आ सकती है। आपको सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है और योग्यता होते हुए भी आपको मान्यता नहीं मिल सकती है।

आपका जन्म अमावस्या के दिन नही हुआ है।

कार्तिक मास का जन्म

सूर्य का अपनी नीच राशि तुला में रहने के दौरान जन्म लेने वाले जातक पर कार्तिक जन्म का दोष लागू होता है। अपने सबसे नीच बिन्दु के आस–पास कार्तिक जन्म दोष का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

आपका जन्म कार्तिक मास में नही हुआ है।

संक्रांति के दिन का जन्म

जिस दिन सूर्य अपनी अगली राशि में प्रवेश करता है, वह दिन संक्राति दिन कहलाता है। यदि आपका जन्म संक्रांति के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म लेने के कारण आपके वंश वृद्धि, आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर सूर्य का अशुभ प्रभाव पड़ सकता है।

आपका जन्म संक्रांति के दिन नही हुआ है।

सार्पशीर्ष में जन्म

यदि आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू हो रहा है, तो इस दोष के साथ जन्म लेने के कारण आपको

मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है तथा आप सब प्रकार के सुखों से हीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू नहीं हो रहा है।

क्रांतिसाम्य या महापात में जन्म

यदि आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में हुआ है, तो आपके स्वास्थ्य और शारीरिक सुखों में कमी आ सकती है। आप असहाय हो सकते हैं।

आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में नहीं हुआ है।

सपात सूर्य दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना

सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

सूर्य ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

सूर्य ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में

कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

सूर्य को अर्घ्य देने की विधि एवं मंत्र

सूर्य को अर्घ्य देने से सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। इससे बुद्धि का विकास होता है, एवं कई प्रकार के लाभ होते हैं।

सूर्योदय के दौरान ताँबे के लोटे में जल भरकर उसमें लाल चंदन, लाल फूल, अक्षत एवं दूध आदि डालकर सूर्याभिमूख होकर अर्घ्य देना चाहिए। सबसे पहले सूर्य का ध्यान करते हुए निम्न विनियोग का जाप करें –

ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता, गायत्री छन्दः, सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।

फिर सूर्य का आह्वान करके निम्न श्लोक का जाप करते हुए अर्घ्य दें –

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
रूणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।।

ध्यान मंत्र –

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतः कराब्जैर्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्।।

सूर्य नमस्कार

सूर्य नमस्कार मंत्र :

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

सूर्य नमस्कार से आत्मा की शुद्धि होती है, मानसिक उलझनों एवं विघ्नों से मुक्ति मिलती है तथा उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता है।

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

सूर्य ग्रह के लिए स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

सूर्य ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे

जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

6	1	8
7	5	3
2	9	4

तांत्रिक यंत्र

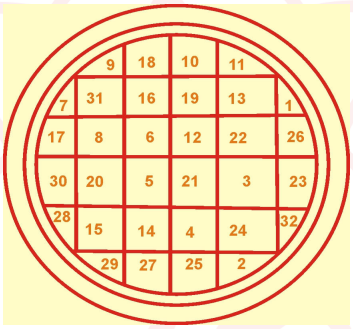

चन्द्रमा ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव–
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्कों गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम।।

चन्द्रमा ग्रह के लिए रत्न

भावगत/राशिगत चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई संबंधों में भाग्यशाली होंगे। आप सुन्दर रूप, आकर्षक व्यक्तित्व, ओजपूर्ण व्यवहार, मनोहारी स्वभाव और उदार प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आप मृदुभाषी और दूसरों के प्रति वास्तविक करूणा रखने वाले होंगे। जीवन में आप बहुत विख्यात होंगे और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा। आप विपरीत लिंग के अनुकूल लोगों की संगति के बहुत शौकीन होंगे। आपका विवाह फलदायी होगा, आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती हैं, आपका घरेलू जीवन बहुत खुशहाल और आनन्दमय होगा। आपका धार्मिक रूझान बहुत उत्कृष्ट होगा, आप परम्पराओं का नियमित रूप से निर्वाहन करेंगे, अपेक्षाकृत कम आयु से प्रवचन सुनेंगे और पवित्र तीर्थों की यात्रा करेंगे।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है। इस कारण से आप एक सकारात्मक कल्पना और संवेदी प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपको अन्तर्ज्ञान का उपहार प्राप्त होगा। आपकी प्रकृति शर्मीली हो सकती है, लेकिन आप कुछ

हद तक अशांत और अस्थिर होंगे और आप कुछ बार अपना रोजगार तथा निवास स्थान बदल सकते हैं। यदि चंद्रमा कर्क राशि में स्थित है, तो आप अवश्य ही बहुत धनी होंगे, यदि चंद्रमा वृश्चिक राशि में है, तो आपको स्वास्थ्य की समस्यायें हो सकती हैं और आप बहुत सुस्त हो सकते हैं। हांलाकि, यदि चंद्रमा वृषभ राशि में स्थित है, तो आपके परिवार के धन में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आपको कुछ एक बार वाहन दुर्घटना का भय हो सकता है।

चन्द्रमा ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

एक नक्षत्र जन्म दोष

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई–बहनों अथवा अपने माता–पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख–शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय –

अपने घर में किसी साफ–सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ–साथ रूद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चंन्द्र दोष

यदि आपका जन्म कृष्णपष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी–कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

केमद्रुम योग दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

सपात (चंद्रमा राहु या केतु के साथ) चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु के साथ स्थिति है, तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात चन्द्र दोष नहीं लागू हो रहा है।

नीच चंन्द्र दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ है। शास्त्रों के अनुसार, आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस दोष के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में नीच चंन्द्र दोष नहीं लागू हो रहा है।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष

आपका जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन हुआ है। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में बाधा आ सकती है, परिवार में मान–सम्मान की कमी हो सकती है, धन की कमी हो सकती है तथा जीवनसाथी पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपके मन में आत्मघात की प्रवृति ज्यादा हो सकती है।

आपकी कुण्डली में कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष नहीं लागू हो रहा है।

गण्डमूल दोष

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है, तो आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष नहीं लागू हो रहा है।

नक्षत्र गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म चंद्रमा के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।

लग्न गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म लग्न के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में मूल गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।

तिथि गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म पूर्णा (5, 10, 15) तिथि के अंतिम 48 मिनट में या नन्दा (1, 6, 11) तिथि के शुरूआती 48 मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।[8]

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।

2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।

4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

चन्द्रमा ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

चन्द्रमा ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

चन्द्रमा ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी – खिरनी की जड़।

चन्द्रमा ग्रह के लिए स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

चन्द्रमा ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे

जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

7	2	9
8	6	4
3	10	5

तांत्रिक यंत्र

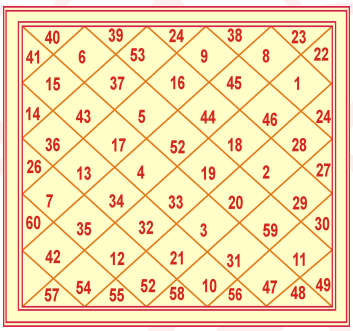

Desktop Application

Professional Astrology Software

Red Astro 11

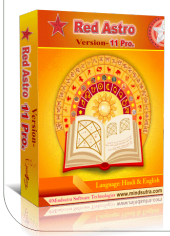

Language: English & Hindi

Price: M.R.P: ₹ 35,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

E-Kundali Prem. 10

Language: English, Hindi & Telugu

Price: M.R.P: ₹ 17,500/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Astro Health Scope

Language: English & Hindi

Price: M.R.P: ₹ 12,500/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Marriage Matching Prem.

Language: English, Hindi & Telugu

Price: M.R.P: ₹ 7,500/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Numerology 10

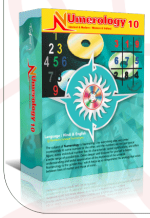

Language: English & Hindi

Price: M.R.P: ₹ 10,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Jaimini Light 10

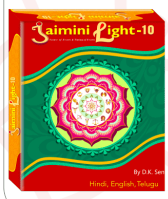

Language: English, Hindi & Telugu

Price: M.R.P: ₹ 5,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Bhrigu Naadi Astro

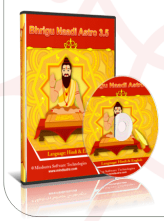

Language: English & Hindi

Price: M.R.P: ₹ 12,500/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Lal-Kitab Vastu

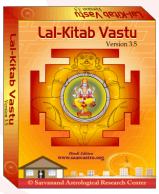

Language: English & Hindi

Price: M.R.P: ₹ 5,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

KP-Logy Advance

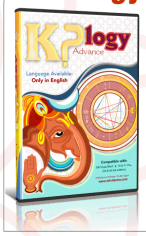

Language: English

Price: M.R.P: ₹ 6,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

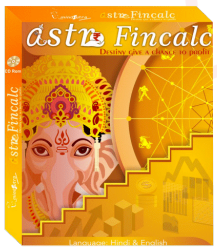

astro Fincalc

Destiny give a chance to profit

Website: www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

E-Mail ID: mindsutra@gmail.com

PH: 9818193410, 011-49043166, 9350247058

Click here to visit our website

Mindsutra Software Technologies

www.mindsutra.com

Ph: 9818193410

Android Application

Professional Astrology Android Apps

Language:

English, Hindi

M.R.P: ₹ 2,500 (M.R.P:$ 35/-for Foreign customer)

Requires Android 2.3 and above

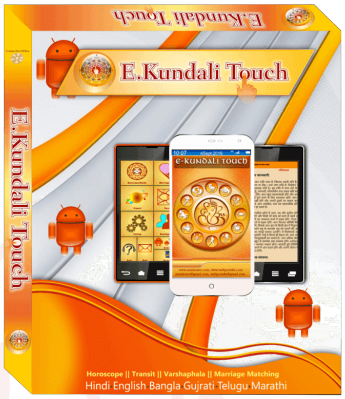

Language:

English, Hindi, Bangla, Gujrati, Telugu & Marathi

M.R.P: ₹ 3,500 (M.R.P:$ 50/-for Foreign customer)

Requires Android 2.3 and above

Language:

English, Hindi

M.R.P: ₹ 3,500 (M.R.P:$ 50/-for Foreign customer)

Requires Android 2.3 and above

Language:

English, Hindi, Bangla, Gujrati, Telugu & Marathi

M.R.P: ₹ 2,500 (M.R.P:$ 35/-for Foreign customer)

Requires Android 2.3 and above

Website: www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

E-Mail ID: mindsutra@gmail.com

PH: 9818193410, 011-49043166, 9350247058

Click here to visit our website

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, ww.webjyotishi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.